

गीत

मुबारक हो मुबारक हो,
कौशलेश्वर को मुबारक हो ।
कौशल्या क्या सुमित्रा,
कैकई घर को मुबारक हो ॥
गणेश्वर को दिनेश्वर को,
फणेश्वर को मुबारक हो ।
रमेश्वर को महेश्वर को,
सुरेश्वर को मुबारक हो ॥
रिषेश्वर को रिछेश्वर को,
कपीश्वर को मुबारक हो ।
यक्षेश्वर को निशेश्वर को,
नभेश्वर को मुबारक हो ॥
जलेश्वर को थलेश्वर को,
बलेश्वर को मुबारक हो ।

भरत को यह सुरिति नितहीं,

लखन को यह लखन नित हीं,

सुमन्तहूँ को यह सुमति नित ही,

हितेश्वर को मुबारक हो ॥

रिपुहन को रिपु दलना ,

मसक सम हाथ से मलना,

मचलती चाल में चलना,

चँवर कर को मुबारक हो ॥

जनकपुरि भी भनक परि गयी,

अवध में आये सीआराम ।

सुखद गद्—गद् गिरा यह,

मिथिलेश्वर को मुबारक हो ॥

मुबारक गरीबि श्रीखण्डि कोकिला,

बृज बन में विहारिणि को,

गणपति सरस्वति पार्वति,

शंकर को मुबारक हो ॥